कुमार जीवन - 68

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ कुमार भी बहुत आये हैं। कुमार दौड़ बहुत लगाते हैं। सेवा में भी अच्छे उमंग से दौड़ लगाते रहते हैं। लेकिन कुमारों की विशेषता और महानता यही है कि आदि से अब तक निर्विघ्न कुमार हो। **अगर कुमार निर्विघ्न कुमार हैं, तो ऐसे कुमार बहुत महान गाये जाते हैं।** क्योंकि दुनिया वाले भी कुमारियों के बजाय कुमारों के लिए समझते हैं कि कुमार योग्य बन जाएँ - यह मुश्किल है। लेकिन कुमार ही विश्व को चैलेन्ज करें कि आप तो असम्भव कहते हो लेकिन हम निर्विघ्न कुमार हैं। ऐसे विश्व को सैम्पल दिखाने वाले कुमार महान कुमार हैं। बापदादा ऐसे कुमारों को सदा ही दिल से मुबारक देते हैं। समझा!

➳ _ ➳ अभी-अभी बहुत अच्छे हैं, अभी-अभी कोई विघ्न आया तो नीचे-ऊपर हो गये - ऐसे नहीं। कुमार अर्थात् **न तो समस्या बनना है और न समस्या में हार खानी है।** कुमार, कुमारियों से भी नम्बर आगे जा सकते हैं लेकिन निर्विघ्न कुमार हों।

➳ _ ➳ क्योंकि कुमारों को बहुत करके यही विघ्न आता है कि कोई साथी नहीं है, कोई साथी चाहिए, कम्पैनियन चाहिए। तो किसी-न-किसी रीति से अपनी कम्पनी बना लेते हैं। कोई-कोई कुमार तो कम्पैनियन भी बना लेते हैं और कोई कम्पनी में आते हैं - बातचीत करना, बैठना, फ़िर कम्पैनियन बनाने का भी संकल्प आता है। लेकिन ऐसे भी कुमार हैं जो बाप के सिवाए न कम्पनी बनाने वाले हैं, न कम्पैनियन बनाने वाले हैं। **सदा बाप की कम्पनी में रहने वाले कुमार सदा सुखी रहते हैं।** तो आप लोग कौन-से कुमार हो? थोड़ी-थोड़ी कम्पनी चाहिए? **सारा परिवार कम्पनी है? फ़िर तो ठीक लेकिन दो-तीन या एक कोई कम्पनी चाहिए, वह रांग है।** तो आप सभी कौन हो? निर्विघ्न हो ना।

➳ _ ➳ नये कुमार भी कमाल करके दिखायेंगे। आखिर तो विश्व को अपने आगे, बाप के आगे झुकाना तो है ना! तो यह कुमारों की कमाल विश्व को झुकायेगी। विश्व आपके गुण-गायन करेगा कि कमाल है कुमारों की! कुमारी मैजारिटी फ़िर भी सेवा में कम्पनी में रहती हैं। लेकिन कुमारों को थोड़ा-सा कम्पनी का संकल्प आता है तो **पाण्डव भवन बना कर सफ़ल रहें**, ऐसा कोई करके दिखाओ। लेकिन आज पाण्डव भवन बनाओ और पाण्डव एक ईस्ट में चला जाए, एक वेस्ट में चला जाए - ऐसा पाण्डव भवन नहीं बनाना।

➳ _ ➳ बापदादा को कुमारों के ऊपर विशेष नाज़ है कि अकेले रहते भी पुरुषार्थ में चल रहे हैं। कुमार आपस में दो-तीन साथी बनकर क्यों नहीं चलते! साथी सिर्फ फ़ीमेल ही नहीं चाहिए, दो कुमार भी रह सकते हैं। लेकिन एक-दो के निर्विघ्न साथी होकर रहें। अभी वह जलवा नहीं दिखाया है। **समय पर एक-दो के सहयोगी बनें तो क्या नहीं हो सकता है?** और बातें आ जाती हैं, इसलिए बापदादा पाण्डव भवन बनाने के लिए मना कर देता है। लेकिन सैम्पल कोई करके दिखाये। ऐसा नहीं पाण्डव भवन बना कर फ़िर जो निमित्त दादी-दीदियां हैं, उनका टाइम लेते रहो। निर्विघ्न हों, एक-दूसरे से योग्य कुमार हों फ़िर देखो कितना अच्छा नाम होता है। सुना कुमारों ने? योग्य कुमार बनो, निर्विघ्न कुमार बनो।

➳ _ ➳ **सेवा के क्षेत्र पर खुद समस्या नहीं बनो लेकिन समस्या को मिटाने वाले बनो**, फ़िर देखो कुमारों की बहुत वैल्यू होगी। क्योंकि कुमारों के बिना भी सेवा नहीं हो सकती

है। तो कुमार क्या करेंगे? सब बोलो - "निर्विघ्न कुमार बनकर दिखायेंगे।" (कुमारों ने बापदादा के सामने खड़े होकर वायदा किया) अभी सभी का फ़ोटो निकल गया है। ऐसे नहीं समझना कि हम उठे तो किसी ने देखा नहीं। फ़ोटो निकल गया। अच्छा है - **"हिम्मते बच्चे मददे बाप"** और सारा परिवार आपके साथ है। **(27-11-1989)**

➢➢ पुरुषार्थ के मुख्य बिंदु

➳ _ ➳ निर्विघन आत्मा की विशेषता

→ संकल्प स्वप्न में भी विघन नहीं आता

→ मनसा सेव स्वतः ही होती रहती है

→ न तो समस्या बनते हैं... न समस्या में हार खाते है

→ सिर्फ एक बाप को ही अपना कम्पैनियन बनाते हैं.. और इस बेहद के पूरे ब्राह्मण परिवार को अपनी कंपनी बनाते हैं

- कभी भी एक आत्मा को अपनी विशेष कंपनी नहीं बनाते

▸ जिसने भी किसी देहधारी को अपना कम्पैनियन बनाया है... उसने सिर्फ और सिर्फ दुःख ही पाया है...

- बाबा से सर्व समबंधो का अनुभव करने पर यह बहुत सरल हो जाता है

→ निर्विघन आत्मा ही महान आत्मा है

➳ _ ➳ कुमार अर्थात

→ जिन्होंने "कु" को मारा है

- कुचक्र से बचने वाले

➳ _ ➳ अगर हम समस्या के समाधान के लिए बड़ों का टाइम लेते हैं

→ तो इसमें भी हिसाब किताब बन जाता है

- बड़ों को निश्चिंत रखने पर दुआएं प्राप्त होती है